

CSIR in Media



News Bulletin
11th to 17th May 2018



CSIR-IIP

17th May, 2018

3-day Summer Residential Programme in Science concludes at IIP

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 16 May: Under the 'Jigyasa' programme for inculcating a feel of science among students of Kendriya Vidyalayas, initiated by the Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi, the mother body of the CSIR-Indian Institute of Petroleum, Dehradun, a three-day Summer Residential Programme in Science, which began on 14 May, concluded at the Institute, here, today. The programme seeks to establish a bridge between its various national research laboratories/institutes and the Kendriya Vidyalayas with a view to giving an opportunity to the students of the science stream to observe and participate in the actual scientific work going on and to ignite in them an interest in basic science. This was one of a series of such programmes to be organised at various times of the year and in



different laboratories of the Institute.

Under this Residential Programme, a total of 24 students of Classes IX-XII (girls and boys) from eight Kendriya Vidyalayas of the Dehradun region stayed in the IIP campus under the tutelage of nine teachers. The Kendriya Vidyalayas that participated in this programme were the Kendriya Vidyalaya (KV), CSIR-IIP, Dehradun; the KV, Ordnance Factory (OLF), Dehradun; the KV, ONGC, Dehradun; the KV, Kashipur; the KV,

NHPC, Banbasa; the KV, Banbasa Cantonment; the KV, Uttarkashi and the KV, New Tehri.

Under this Residential Programme, scientists of the institute taught students about the variety of crude oils, their origin, refining, testing and application as well. The students conducted a few experiments like viscosity and density determination, etc., of crude oil and products. The students were also shown how the analysis of petroleum products using sophisticated

techniques like FT-IR, HR-GC MASS, XRD, TGA, etc., is done.

Visits of the participating students to several laboratories of the Institute, viz., the Biotechnology Laboratory, the Waste Plastics Conversion Laboratory, the Bio-jet Fuels Laboratory and the Vehicular Emissions Laboratory were also organised.

Overall, the students got an excellent exposure to practical science and felt themselves to be a part of a science laboratory. The

students were excited to visit other laboratories of the institute.

The whole programme was overseen by the 'Jigyasa' Nodal Officer, Dr Aarti, Scientist, IIP, with the help of Dr DC Pandey, Principal Technical Officer, and Dr Anil Jain, Principal Scientist, as well as others.

The event was held under the patronage of by Dr Anjan Ray, Director, IIP, who also interacted with the students and motivated them to adopt a career in science in any field of their choice.

Published in:

Garhwal Post, Page no. 16

17th May, 2018



सीएसआईआर-आईआईपी में बुधवार को जिज्ञासा कार्यक्रम हुआ। • हिन्दुस्तान

स्कूली बच्चों ने ली शोध की जानकारी

देहरादून। सीएसआईआर-आईआईपी में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की पहल पर आयोजित तीन दिवसीय ग्रीष्मकालीन आवासीय कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने आईआईपी की प्रयोगशाला में चल रहे अनुसंधानों की जानकारी हासिल की।

सीएसआईआर की जिज्ञासा कार्यक्रम के तहत इस उद्देश्य से इस आयोजन को

किया गया। कार्यक्रम में आईआईपी केवी, ऑडिनेंस फैक्ट्री, ओएनजीसी, केवी काशीपुर, केवी एनएचपीसी, केवी बनबसा, केवी उत्तरकाशी, केवी नई टिहरी के छात्र शामिल हुए। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने छात्रों को कच्चे तेल, उनकी उत्पत्ति की जानकारी ली। यहां डॉ. आरती, डॉ. डीसी पांडेय, डॉ. अनिल कुमार जैन, डॉ. अंजन रे मौजूद रहे।

Published in:

Hindustan, Page no. 1

नेशनल अरोमा मिशन करेगा किसानों की मदद

■ नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर.

भारत सरकार की संस्था नेशनल अरोमा मिशन सी मैप के वैज्ञानिक डा संजय कुमार और दीपक कुमार

पत्रवार्ता

■ अगले दो सालों में बस्तर में एक हजार एकड़ में फसल लेने का लक्ष्य

■ राम रोजा, नींबू घास के लिए आबोहवा अनुकूल, क्लस्टर बना तो तैयार होगा आसवन संयंत्र



जगदलपुर. मार्केटिंग सोसाइटी में पत्रकारों से चर्चा करते वैज्ञानिक.

बस्तर की आबोहवा के मुताबिक यहां बेहतर तरीके से उपजने वाली लेमन ग्रास, पामा रोजा की खेती की पैरवी किसानों के बीच जाकर कर रहे हैं. किसानों ने यदि रुचि दिखाई तो अगले दो सालों के भीतर बस्तर के अलग-अलग हिस्सों में एक हजार एकड़ में औद्योगिक फसलों की खेती करने का लक्ष्य लेकर सीएसआईआर

चल रहा है.

मार्केटिंग सोसाइटी के दफ्तर में पत्रकारों से चर्चा के दौरान वैज्ञानिकों ने बताया कि देश भर में कुल 38 प्रयोगशालाओं की स्थापना भारत सरकार ने की है. अलग-अलग जलवायु वाले क्षेत्र में सुगंधित पौधों की खेती की जा सकती है और इससे किसानों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ पहुंच सकता है. इसके लिए किसानों का क्लस्टर तैयार किया जाएगा, जिसके बाद आसवन संयंत्र की

स्थापना सरकार द्वारा की जाएगी. लखनऊ स्थित नोडल प्रयोगशाला तकनीकी सपोर्ट देगी, जिसके आधार पर किसान औद्योगिक फसलों की खेती में पारंगत हो सकेंगे. कोंडागांव जिले के मालगांव में पहले प्रोजेक्ट की शुरूआत की गई है. यहां 15 किसानों का समूह तैयार किया गया है, जिसे काफी हद तक सफलता मिल रही है. अब बस्तर जिले में इसकी शुरूआत करने का लक्ष्य लेकर वे यहां पहुंचे हैं.

बिचौलिए रहेंगे दूर

वैज्ञानिक दय ने बताया कि फसल तैयार होने के बाद वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसानों को बाजार उपलब्ध करवाएंगे. इस पूरी प्रक्रिया के बीच बिचौलियों की कोई भूमिका नहीं रहेगी. किसान धान, मक्का जैसी पारंपरिक फसलों से कई गुना अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं. जरूरत है इसे सही ढंग से उपजाने और इसके प्रोसेसिंग की. एक बार रोपी जाने वाली नींबू घास और पामा रोजा की फसल 5 सालों तक काटी जाती है.

Published in:

Navbharat Times Page no. 5

Odisha: Central Road Research Institute scientists to audit Gurupriya bridge soon

CSIR-CRRI

16th May, 2018

The department has also asked the Kolkata-based Royal Infraconstru Limited, the agency which has constructed the project, to make bridge load test arrangements.

MALKANGIRI: New Delhi-based CSIR-Central Road Research Institute (CRRI) will soon conduct a third party quality audit for the 910 metre Gurupriya bridge at Janbai in the cut-off region of Chitrakonda here.

The bridge is likely to be dedicated by Chief Minister Naveen Patnaik in the first week of June. Chief Engineer of DPI and Roads in the Works department Om Prakash Patel had written to to the Director of CSIR to conduct a third party quality audit for the bridge, construction of which was completed recently.

Responding to the Odisha Government's request, the CSIR on May 7 has sent a letter to the Works department expressing its readiness to do the same at a cost of Rs 38.56 lakh. The State Government has approved the CSIR amount.

Sources said the Executive Engineer of Works Department, Malkangiri on Saturday deposited Rs 19.28 lakh, which is 50 per cent of the total cost demanded by the agency, in CSIR's account. The department will release the rest 50 per cent of the amount after submission of final audit report.

The Works department in its letter to CSIR has assured that the visiting team of scientists would be given proper security cover during their work with help of BSF personnel and district police as the bridge is located in a Maoist-infested area.

The department has also asked the Kolkata-based Royal Infraconstru Limited, the agency which has constructed the project, to make bridge load test arrangements as part of its contractual obligation under EPC agreement.

At least 10 scientists from CRRI will conduct the bridge's quality audit. The works Department has also asked CSIR to complete the audit within a month to facilitate Odisha Government to implement CRRI's observations/recommendations (if any) before the bridge is thrown open to public.

Published in:
[The New Indian Express](#)

CSIR-CBRI

16th May, 2018

भूमिगत मेट्रो पर्यावरण अनुकूल प्रणाली

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

संवाद सहयोगी, रुड़की : सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में मंगलवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं टंडन कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली के प्रबंध निदेशक प्रो. महेश टंडन ने कहा कि शहरी सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में मेट्रो का कोई विकल्प नहीं है। प्रौद्योगिकी विकास में भूमिगत मेट्रो ऊर्जा संरक्षण एवं पर्यावरण के लिए सबसे अनुकूल प्रणाली साबित हो रही है। यह प्रणाली अन्य सभी सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों से कम कार्बन उत्सर्जित करती है।

मुख्य अतिथि प्रो. टंडन ने शहरी परिवहन संरचनाओं में स्थिरता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए शहरी



सीबीआरआई रुड़की में आयोजित कार्यक्रम में त्रैमासिक द्विभाषी प्रकाशन का विमोचन करते अतिथि • जागरण

सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में मेट्रो के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। विशिष्ट अतिथि एवं वास्तुविद् डॉ. पीके दास ने कहा कि देश में विभिन्न ग्रामीण आवास तकनीकों से ग्रामीण क्षेत्रों में अगले पांच साल में 30 लाख मकानों

का निर्माण हो जाएगा। साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। संस्थान के निदेशक डॉ. एन गोपालकृष्णन ने कहा कि पोखरण में नाभिकीय परीक्षणों से नाभिकीय आयुद्ध प्रौद्योगिकी में देश ने

महारथ हासिल की है। उन्होंने बताया कि त्रिशूल मिसाइल, स्वदेशी वायुयान हंसा-तीन के सफल परीक्षण उड़ान भरने पर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस घोषित किया था। जिसे प्रति वर्ष भारतीय तकनीकी साहस और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों के जश्न के रूप मनाया जाता है।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान की त्रैमासिक द्विभाषी प्रकाशन सीबीआरआई न्यूज लेटर-भवनिका का विमोचन किया गया। इस मौके पर डॉ. एके मिनोचा, वैज्ञानिक सौमित्रा मैती, डॉ. पीके दास, डॉ. अतुल अग्रवाल, डॉ. सुवीर सिंह, के अरोड़ा, विनोद कुमार एवं नदीम अहमद आदि मौजूद रहे।

Published in:
Dainik Jagran

This CLRI tanning technique leaves chromium hiding

CSIR-CLRI

16th May, 2018



total of 1,500) are using this patented technology even as it generates interest in Ethiopia, Sri Lanka, Vietnam, South Africa, the Netherlands, New Zealand, Vietnam and Brazil said J Raghava Rao, Chief Scientist, CLRI, who headed the five-member team.

For a hundred years, leather tanneries have been polluting water bodies and soil by discharging billions of litres of highly toxic chromium contaminated water. This is because removing chromium from the waste water is expensive and the leather sector, dominated by small players, cannot afford it. But a cost-effective solution may finally be at hand to solve this problem. A five-member team of scientists at CSIR's Central Leather Research Institute (CLRI) in Chennai have come up with a path-breaking solution: Waterless Chrome Tanning Technology (WCTT). WCTT, a process developed a couple of years ago, is seeing a rather gradual adoption in India. About 60 chrome-based tanneries (out of a

Resistance to change

Resistance to change among traditional tanners is the main reason for the slow adoption, though those who have implemented the technology swear by it. "This is the best technology for the industry. Our company annually saves about ₹25 lakh," said AR Manikandan, Technical Manager at Bharat Enterprises in Ranipet, one of the first leather manufacturing units to adopt the WCTT. "In fact, we recovered the licence fee of ₹ 2.5 lakh in the very first month of deploying the technology," he added. Chromium is the key to leather tanning. Of the 18 billion sq ft of leather produced globally every year, nearly 16 billion is made using chromium.

India produces about 2 billion sq ft of leather and the tanneries discharge about 20,000 tonnes of chromium. More than salt and sodium sulphate, chromium is the most dangerous pollutant. When let out, the sludge forms a layer on the soil and prevent percolation of water. The WCTT completely eliminates chromium-bearing water discharge. “This is the highlight of the WCTT,” says P Saravanan, Chief Scientist, CLRI. B Madhan Principal Scientist, CLRI, and Aravindhan Rathinam, a leather technologist, were the other two members of the team that invented WCTT process. Annually, about 70,000 tonnes of basic chromium sulphate (BCS) is used. The average uptake (absorption) of chromium by leather pelts during tanning is only 65 per cent out of chrome tanning agent offered. This means, 24,000 tonnes of chromium tanning agent remains unabsorbed and gets discharged along with waste water.



Leather mixed with waste water containing chromium, salt and acid gushes out of the huge mixing drum under traditional process

Better absorption

According P Thanikaivelan, Principal Scientist, CLRI, in the WCTT the tanning is carried out without water but with ‘simple chemicals’ that ensure 100 per cent absorption of chromium by the hide.

“We are hopeful that more tanneries will use this technology. It’s just a matter of time,” said Rao of CLRI.

Published in:
[The Hindu](https://www.thehindu.com)

CSIR-NCL

16th May, 2018

India's drive on AMR: No results yet

ARCHANA JYOTI ■ NEW DELHI

At a time when India is battling with increased antimicrobial resistance (AMR) cases pushed by irrational use of antibiotics by healthcare practitioners and the uninformed public, a study published in the latest issue of the Current Science journal has called for sounding the alarm and educate each citizen about the scope and threat of the menace.

AMR occurs when microorganisms such as bacteria, viruses, fungi and parasites change in ways that render the medications usually used to cure the infections they cause ineffective. It is rapidly spreading and has been identified as a major global threat by WHO.

The study also found that India's Red Line campaign on antibiotics to curb the AMR menace is yet to deliver results. Titled 'Knowledge, attitude and practice of antibiotic use and antimicrobial resistance: a study post the 'Red Line' initiative' the survey found that just forty seven per cent of the people surveyed were unaware of the differences between over-the-counter (OTC) drugs and antibiotics while one in



The researchers said that interventions and awareness campaigns should not be only educational but multipronged to tackle the serious societal issue of antibiotic resistance within the society

four believes that dose-skipping does not contribute to AMR.

One in ten tends to self-medicate while one in five bought medicines without prescription or started an antibiotic course by calling a doctor,

noted the scientists Deepanwita Banerjee and Anu Raghunathan from Chemical Engineering Division of the Pune based National Chemical Laboratory, a lab of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR).

They also observed that even educated respondents were unaware about the harmful impact of AMR. Of the 504 respondents, 15 individuals thought the Red Line on the medicine strip or package had no purpose and among them 11 were postgraduates.

Overall, 63 per cent respondents were unaware that the Red Line indicated pre-

scription drugs and this included 71 per cent undergraduates, 58.5 per cent graduates and 55 per cent postgraduates.

What's worse, 31 per cent were unaware that bacterial infection was not the cause for common cold and cough which included 28 per cent of postgraduates and 38 per cent graduates. Almost half the respondents (47 per cent) were unaware that antibiotics could not cure viral infections but only bacterial infection.

The Red Line was not identified by a majority of the population and neither could they identify the global threat posed by AMR. One in five

believed antibiotic resistance was not a serious issue. One in four individuals stopped taking the antibiotics once they felt better. One in ten people self-medicated on a regular basis; including one in five undergraduate and one in seven graduates.

AMR is of particular concern in developing nations, including India, where the burden of infectious diseases is high and healthcare spending is low. As per a report in The Lancet infectious Diseases journal in 2014, India consumed a whopping 13 billion units of antibiotics in 2010 while an article 'Antibiotic Resistance in India: Drivers and Opportunities for Action' released by PLOS Medicine in March 2016 said that AMR is a global threat but the situation in India is largely alarming.

For AMR containment, the Union Health Ministry has launched the National Programme that include AMR surveillance with a network of 10 laboratories across the country. The researchers said that interventions and awareness campaigns should not be only educational but multipronged to tackle the serious societal issue of antibiotic resistance within the society.

Published in:

The Pioneer, Page no. 5

Civic body to produce biogas from waste

CSIR-CLRI

15th May, 2018



Signs MoU with CSIR-CLRI

In a significant move to produce bio-compressed natural gas (bio-CNG) from degradable waste, the City Corporation has signed a Memorandum of Understanding with Council of Scientific and Industrial Research-Central Leather Research Institute (CSIR-CLRI) for preparing a Detailed Project Report (DPR) to set up a biogas bottling plant so as to sell it to consumers for operating cars and buses. The MoU was signed on Monday by B. Chandrasekaran, Director, CSIR-CLRI and N. Ravichandran, Commissioner, Tiruchi City Corporation, in Chennai in the presence of B.N. Das, Deputy Director, P. Shanmugam, Project Leader, P. Kanthasamy, Principal Technical

Officer of CLRI and S. Kannan, Executive Engineer, In-Charge of Tiruchi Corporation. The CLRI will submit the DPR within three months. Besides the basic design of biogas bottling plant, it will also provide technical guidance on producing biogas from wet waste. The Tiruchi Corporation will pay ₹5 lakh to CLRI for the service. Speaking to *The Hindu* over phone, Mr. Shanmugam said that the project has been christened 'Waste into wheels.' The Tiruchi Corporation generates 450 tonnes of mixed municipal solid waste every day. Of this, nearly 225 tonnes was organic degradable waste, which was the main raw material for producing compressed natural gas. About 100 tonnes of degradable was sufficient for building a 100 tpd biogas bottling plant. Hundred tonnes of green waste could produce 7,500 to 10,000 cubic meter of biogas, which was equivalent to 15,000 to 20,000 units of electricity. However, Mr. Shanmugam said that the project was aimed at producing Compressed

Natural Biogas (CNG) instead of producing electricity. In other words, the plant could produce 4,800 kg of CNG per day. It would be filled into 14 kg capacity cylinders and could be used for operating cars and buses.

Mr. Ravichandran said that once the DPR was ready, the Corporation would go for floating tender to set up the plant. It would be established under the Public Private Partnership (PPP) mode. It has been planned to set up the plant within 12 to 15 months.

Published in:
[Avenue Mail](#)

अच्छी खबर

शुरुआती चरण में मध्यप्रदेश के 20 जिलों में उपलब्ध कराए जाएंगे फिल्टर, देश के 20 राज्यों के हजारों गांवों में फ्लोराइडयुक्त पानी पीने को मजबूर हैं लोग

ग्रामीणों को फ्लोरोसिस से बचाएगा सस्ता नैनो फिल्टर

सुमेधा पुराणिक चौरसिया • इंदौर

देश के 20 राज्यों में हजारों गांवों के लाखों लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने को विवश हैं। इनके लिए राहत भरी खबर मप्र के भोपाल से आई है, जहां स्थित एडवांस्ड मटीरियल्स एंड प्रोसेस रिसर्च इंस्टीट्यूट (एएमपीआरआइ) ने एक सस्ता और कारगर नैनो फिल्टर विकसित कर दिखाया है। फ्लोराइड व आर्सेनिक कणों को छानने में यह शतप्रतिशत सक्षम है। इसे शुरुआत में फ्लोरोसिस से प्रभावित मप्र के 20 जिलों में और फिर अन्य प्रभावित राज्यों में भी ग्रामीणों को नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध कराया जाएगा। प्रक्रिया की शुरुआत मप्र के सीहोर जिले के आष्टा से हो चुकी है।

बाजार से पांच गुना सस्ता : वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (द काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च, सीएसआइआर) के सहयोगी संस्थान एएमपीआरआइ, भोपाल ने इस फिल्टर को महज 1500 रुपये की लागत तक सीमित कर उल्लेखनीय

1500 रुपये शुरुआती दाम, आगे नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध कराए जाएंगे



सीएसआइआर-एएमपीआरआइ, भोपाल द्वारा तैयार नैनो फिल्टर • नईदुनिया



फ्लोरोसिस पीड़ित ग्रामीण • नईदुनिया

नैनो एडजॉरबेंट तकनीक पर आधारित

सीएसआइआर-एएमपीआरआइ भोपाल के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आइबी सिंह ने बताया कि फिल्टर को तैयार करने में पूरे दस वर्ष लगे। इसके लिए नैनो एडजॉरबेंट तकनीक को विकसित करना एक चुनौती थी। यह ग्रामीण क्षेत्रों में दूषित पानी की समस्या को खत्म करने में मददगार होगी। छोटे-छोटे वाटर फिल्टर तैयार किए गए हैं जो गांव के मकानों में भी आसानी से लग सकते हैं। नल से सीधे इसमें पानी भरकर शुद्ध पानी को मटके या बाल्टी में भरा जा सकता है। सबसे बड़ी बात कि यह बिना बिजली के काम करता है। सालभर में दो बार इसका फिल्टर बदला जाता है। प्रभावित इलाकों में ग्रामीणों को इसे नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध कराए जाने की योजना है।

हमारा काम जनोपयोगी तकनीकी संयंत्र बनाना है। इसे गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए सरकार, एनजीओ या उद्योगों का सहारा लेते हैं। भविष्य में इसी टेक्नोलॉजी के आधार पर कम्यूनिटी फिल्टर बनाने की योजना है।

डॉ. आइबी सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआइआर-एएमपीआरआइ, भोपाल।



फ्लोराइड ग्रस्त राज्य		असम	18	उत्तर प्रदेश	10
प्रदेश	जिले	तमिलनाडु	16	पश्चिम बंगाल	08
राजस्थान	30	बिहार	15	झारखंड	06
मध्यप्रदेश	20	ओडिशा	15	दिल्ली	06
आंध्रप्रदेश	20	हरियाणा	14	जम्मू-कश्मीर	02
कर्नाटक	20	छत्तीसगढ़	12	केरल	01
महाराष्ट्र	19	पंजाब	11	मणिपुर	01
गुजरात	18				

सफलता पाई है। बाजार में उपलब्ध इस गुणवत्ता के फिल्टर इससे करीब पांच गुना महंगे हैं। सरकारी उपक्रमों और एनजीओ की मदद से इसकी लागत और कम करने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीणों को फिलहाल चार किस्तों में इसके भुगतान

की सुविधा दी जाएगी।

गांव-गांव तक पहुंचाएंगे : सीएसआइआर-एएमपीआरआइ, भोपाल के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आइबी सिंह ने बताया कि 11 मई 2018 को इसे विधिवत लांच किया गया। मप्र के लोक स्वास्थ्य

यात्रिकी विभाग (पीएचई) से भी अनुबंध की तैयारी है। फिलहाल सीएसआइआर ने यह तकनीक एमडब्ल्यू सोशल इंटरप्राइजेस नामक कंपनी को हस्तांतरित कर दी है ताकि इसे जमीनी स्तर पर उपयोग में लाया जा सके।

20 राज्यों में है फ्लोरोसिस का कहर : देश के 20 राज्यों के हजारों गांवों में लोग अरसे से फ्लोराइड युक्त पानी की मार झेल रहे हैं। फ्लोराइड के अधिक मात्रा में (1.5 मि.ग्रा. से अधिक) शरीर में जाने से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं और व्यक्ति

लगभग अपंग हो जाता है। लंबे समय तक फ्लोराइड युक्त पानी पीने के कारण बड़ी संख्या में लोग अपंग और कैंसर का शिकार हुए हैं। इस समस्या का स्थाई हल नहीं निकल सका है। ऐसे में यह पहल एक उम्मीद जगा रही है।

NML showcases technical prowess

CSIR-NML

12th May, 2018

The National Technology Day was celebrated on Friday at the CSIR-National Metallurgical Laboratory (NML). HM Bangur, managing director, Shree Cement Ltd., Kolkata, delivered the Technology Day Lecture as the chief guest at the function. Bangur said that CSIR-NML had produced excellent results during 70 years of journey and we observed NML as the storehouse of knowledge in multidisciplinary areas. Bangur shared his views about the relationship between academia, research and industries. He also added, today, Shree Cement is more energy efficient company in the world. It was only possible due to continuous learning and improvement of products as per the market demands.

Dr I Chatteraj, director, CSIR-NML said, CSIR-NML has initiated work on two projects of national importance. The first is the setting up of a pilot plant for production of electrical amorphous steels, a first of its kind, in the country. There has been an increasing use of amorphous materials for a variety of transformers: with the entire material being imported. This initiative by CSIR-NML will catalyse indigenous amorphous steels development. The second project of national importance is with regards to the development of Advanced Ultra-Supercritical (AUSC) Power plants in India. The project, co-ordinated by NTPC, BHEL and IGCAR aims at improving the efficiencies of thermal power plants by increasing the temperature of operations.

Dr Chatteraj also added, a number of advanced materials, processes and techniques were developed by CSIR-NML. A super-capacitance material was developed for a Sri Lankan multinational. A new series of 18 karat gold alloys, were designed and developed for TITAN through arc melting and suction casting. For the same client, cyanide free electrolyte was developed for electrolytic cleaning of rust from plain carbon steel components of wrist watches.

A chrome free polymeric coating, having corrosion inhibitor groups chemically bonded to the polymer backbone, was developed for an Aerospace Multinational. A complete cost effective on-line defect detection system developed by CSIR-NML has been commissioned at Tarapur wire mill, of Tata steel.

Dr A Mitra, Chief Scientist & Head, RPBD highlighted on the various technologies developed by CSIR-NML during the year 2017-18 and four Technologies amongst them have been commercialised to the following organisation: For production of Ferric Sulphate and Silica Powder from Copper Slag, transferred to Sterlite Copper, Tuticorin, Processing of Cu Slag for production of Ferric Sulphate as Si-reach residue to Vedanta Ltd., Thoothukudi. For production of Pigment Grade Iron Oxide from Waste Chloride Pickle Liquor, transferred to Rang Sarjan Chemicals, Varuch Gujarat. Quick Repairing Material by Geopolymerisation of Fly Ash & Granulated Blast Furnace Slag to Venspra Labs, Vijaywada.

Published in:
[The Pioneer](#)

National Technology Day at CSIR-AMPRI

CSIR-AMPRI

12th May, 2018

CSIR-AMPRI, Bhopal observed National Technology Day on Friday to commemorate the momentous accomplishments of Science and Technology. The day, May 11 is observed every year to commemorate the series of nuclear tests at Pokharan. Subsequently the firing of Trishul missile by DRDO and launching of HANSA civilian aircraft by CSIR - NAL have marked the Technology Day. The theme of the celebration was 'Science and Technology for Sustainable Future'. Navin Chandra, Director General, MP Council of Science and Technology was the Chief Guest and Prof Sunil Kumar, Vice Chancellor, Rajiv Gandhi Proudhyogiki

Vishwavidyalay, Bhopal and Chandramauli Shukla, CEO, Bhopal Smart City Development Corporation were the Guests of Honor on the occasion. At the outset, AK Srivastava, Director, CSIR - AMPRI, Bhopal welcomed the guests and highlighted the activities of AMPRI, Bhopal. He said that our technologies should be strong enough so that we can export them. He also mentioned several technologies transferred by CSIR - AMPRI in the recent past. Chief Guest Navin Chandra in his address, touched upon the historical perspective of technology development.

He said that Artificial Intelligence and mechanization are both big challenges for mankind which are to be tackled wisely. All technologies are created with good thoughts but we have to decide how far we can go with it, he said. Prof Sunil Kumar in his address said that we should develop technologies with limited resources which should be useful for the masses. He put emphasis on use of solar energy for sustainable development as we are quite fortunate to be located near equator and have sufficient sunlight throughout the year. He said that AMPRI's recent technologies can be brought into field.

Chandramauli Shukla said in his address that the basic goal of our institutions is to improve the quality of life using technology. He underlined the possibilities of collaboration between both the institutions. Rupa Dasgupta, Chief Scientist, CSIR - AMPRI underlined the importance of celebration of National Technology Day. CSIR - AMPRI has developed the technology of Radiation Shielding material. SK Sanghi, Sr Principal Scientist spoke on the MoU to be signed with M/s Saideep Healthcare Pvt Ltd, Ahmednagar for the use of this material in their hospital. CSIR - AMPRI has transferred the technology of nanoadsorbent based domestic defluoridation water filter moderm to M/s MWS Enterprises Ltd., Indore. On the occasion the product was launched for the public named Amrit Basic. The filter is able to remove impurities of Fluoride and Arsenic from water.

Published in:
[The Pioneer](#)

THE AVENUE MAIL

Jamshedpur, Saturday, May 12, 2018

NML celebrates National Technology Day, showcases its technical prowess

Jamshedpur, May 11: National Technology Day was celebrated on Friday at CSIR - National Metallurgical Laboratory (NML), H M Bangur, managing director, Shree Cement Ltd., Kolkata graced the function as chief guest and delivered Technology Day Lecture.

Bangur said that CSIR-NML had produced excellent results during 70 years of journey and we observed NML as the storehouse of knowledge in multidisciplinary areas. Bangur shared his views about the relationship between academia, research and industries. He also added, today, Shree Cement is more energy efficient company in the world. It was only possible due to continuous learning and improvement of products as per the market demands.

Dr. I. Chatteraj, director, CSIR-NML said, CSIR-NML has initiated work on two projects of national



importance. The first is the setting up of a pilot plant for production of electrical amorphous steels, a first of its kind, in the country. There has been an increasing use of amorphous materials for a variety of transformers: with the entire material being imported. This initiative by CSIR-NML will catalyse indigenous amorphous steels development. The second project of national importance is with regards to the development of Advanced Ultra-

Supercritical (AUSC) Power plants in India. The project, co-ordinated by NTPC, BHEL and IGCAR aims at improving the efficiencies of thermal power plants by increasing the temperature of operations.

Dr. Chatteraj also added, a number of advanced materials, processes and techniques were developed by CSIR-NML. A super-capacitance material was developed for a Sri Lankan multinational. A new series of 18 karat gold alloys, were

designed and developed for TITAN through arc melting and suction casting. For the same client, cyanide free electrolyte was developed for electrolytic cleaning of rust from plain carbon steel components of wrist watches.

A chrome free polymeric coating, having corrosion inhibitor groups chemically bonded to the polymer backbone, was developed for an Aerospace Multinational. A complete cost effective on-line defect detection system developed

by CSIR-NML has been commissioned at Tarapur wire mill, of Tata steel.

Dr. A. Mitra, Chief Scientist & Head, RPB highlighted on the various technologies developed by CSIR-NML during the year 2017-18 and four Technologies amongst them have been commercialised to the following organisation: For production of Ferric Sulphate and Silica Powder from Copper Slag, transferred to Sterlite Copper, Tuticorin, Processing of Cu Slag for production of Ferric Sulphate as Si-reach residue to Vedanta Ltd., Thoothukudi. For production of Pigment Grade Iron Oxide from Waste Chloride Pickle Liquor, transferred to Rang Sarjan Chemicals, Varuch Gujarat. Quick Repairing Material by Geopolymerisation of Fly Ash & Granulated Blast Furnace Slag to Venspra Labs, Vijaywada.

Published in:

The Avenue Mail

एनएमएल के फार्मूले पर उर्जा परियोजनाओं को अक्रिस्टलीय विद्युत स्टील का देश में होगा उत्पादन

लाइफ रिपोर्टर @ जमशेदपुर

बर्मागाँव स्थित सीएसआर-एनएमएल में शुक्रवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सीमेंट लिमिटेड, कोलकाता के प्रबंध निदेशक एचएम बंगूर मौजूद रहे. सीएसआइआर-एनएमएल के निदेशक डॉ आई चट्टोराज ने राष्ट्रीय औद्योगिक दिवस के महत्व एवं उपलब्धियों की जानकारी दी. कार्यक्रम में अलग-अलग शिक्षण संस्थानों के 150 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया. कार्यक्रम में एनटीटीएफ बर्मागाँव, आइडीटीआर गम्हरिया, अल कबीर पॉलिटेक्निक, एआईटी आदित्यपुर के विद्यार्थी मौजूद रहे.

विद्यार्थियों ने एनएमएल का भ्रमण कर विभिन्न शोध कार्यों की जानकारी ली. प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित मुख्य व्याख्यान में एनएमएल की ओर से पिछले पांच वर्ष में विकसित किये कुल 66 तकनीक की जानकारी दी गयी. इसके अलावा एनएमएल के निदेशक व वैज्ञानिकों ने वर्ष 2017-18 में विकसित की गयी विभिन्न तकनीकी के बारे में बताया.

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व के बारे में कहा गया
अवगत : कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाने की परंपरा के बारे में विस्तार से बताया गया. 11 मई 1998 में पोखरण में किये गये परमाणु परीक्षण के बाद 11 मई 1999 से राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन हो रहा है. इसी दिन पहले स्वदेशी विमान हंसा

एनएमएल ने प्रस्तुत किया वार्षिक रिपोर्ट



70 वर्षों में सीएसआइआर-एनएमएल ने दिये श्रेष्ठ परिणाम

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री सीमेंट लिमिटेड, कोलकाता के प्रबंध निदेशक एचएम बंगूर ने कहा कि सीएसआइआर-एनएमएल ने 70 वर्षों के दौरान उत्कृष्ट परिणाम दिए हैं. एनएमएल की यात्रा को प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में बहुआयामी में ज्ञान के भंडार के रूप में देखा जाता है. बंगूर ने शिक्षण संस्थान, शोध संस्थान व उद्योग के बीच परस्पर समन्वय पर बल दिया. उन्होंने कहा कि निरंतर उत्पादन में सुधार और नये प्रयोगों की जानकारी की बदौलत ही श्री सीमेंट कुशल औद्योगिक इकाई के रूप में काम कर रही है.



इन प्रोजेक्ट पर शुरू हुआ काम : एनएमएल के चीफ वैज्ञानिक डॉ ए मित्रा आरपीबीडी ने विभिन्न तकनीकों पर प्रकाश डाला बताया कि वर्ष 2017-18 के दौरान सीएसआइआर-एनएमएल द्वारा विकसित चार टेक्नोलॉजी का लिए व्यवसायीकरण किया गया है. इसमें कॉपर स्लेग से फेरिक सल्फेट और सिलिका पाउडर का उत्पादन सहित अन्य तकनीक शामिल है.

-3 का बेंगलुरु में परीक्षण किया गया. प्रौद्योगिकी दिवस के दिन ही त्रिशूल मिसाइल का सफल परीक्षण हुआ.

राष्ट्रीय महत्व की दो परियोजनाओं पर काम कर रहा एनएमएल

सीएसआइआर-एनएमएल के निदेशक डॉ आई चट्टोराज ने बताया कि सीएसआइआर-एनएमएल ने इस वर्ष कुल छह तकनीकी विकसित की. इसमें से चार तकनीकी पर उद्योग की स्थापना हो चुकी है. उन्होंने बताया कि एनएमएल ने राष्ट्रीय महत्व की दो परियोजनाओं पर काम शुरू किया है. इसमें से पहला प्रोजेक्ट उर्जा परियोजनाओं के लिए अक्रिस्टलीय विद्युत स्टील के पायलट पैमाने पर विकास से संबंधित है. जबकि दूसरा प्रोजेक्ट एनटीपीसी, बीएचइएल तथा आइजीसीएआर के साथ मिलकर उन्नत अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट की स्थापना है. उन्होंने बताया कि एनएमएल के सहयोग से टाइटन कंपनी के लिए 18 कैरेट गोल्ड का विकास जैसे अहम प्रोजेक्ट पर पहले से काम चल रहा है.

■ एक वर्ष में छह तकनीकी की गई विकसित, चार पर औद्योगिक इकाईयों ने शुरू किया काम

ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए प्रौद्योगिकी का सतत विकास जरूरी

विज्ञान नगरी सहित विभिन्न संस्थानों में मना 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस', पोस्टर प्रतियोगिता, फिल्म शो व प्रश्नोत्तरी के माध्यम से बताये गये तकनीकी रहस्य

लखनऊ (एसएनबी)। आंचलिक विज्ञान नगरी सहित राजधानी स्थित विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में शुक्रवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाया गया। आंचलिक विज्ञान नगरी में कार्यक्रम की शुरुआत पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता से हुई। प्रतियोगिता का विषय 'राष्ट्र के सतत विकास हेतु प्रौद्योगिकी' रहा। इसके पश्चात विद्यार्थियों के लिए फिल्म शो, लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान के साथ-साथ विज्ञान प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन हुआ। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित विद्यार्थियों से विविध प्रश्न पूछे गये एवं सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कारों के लिए चुना गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय लखनऊ विश्वविद्यालय भौतिकी विभाग के प्रोफेसर एमएम वर्मा ने बड़े ही रोचक तरीके से अपना व्याख्यान पेश किया।

अपने व्याख्यान में बोलते हुए प्रो. वर्मा ने ब्रह्माण्ड की कहानी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ब्रह्माण्ड के विविध रहस्यों को समझने के लिए हमें निरंतर अपनी प्रौद्योगिकी को विकसित करते रहना होगा। उन्होंने बताया कि नई विकसित होने वाली प्रौद्योगिकी से यह पता चला कि हमारी आकाशगंगा के केन्द्र में एक ब्लैकहोल है। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रह्माण्ड में मात्र 5 प्रतिशत चीजें ही देखी जा सकती हैं बाकी 95 प्रतिशत डार्क मैटर होने के कारण हमें दिखाई नहीं देती। हमारे ब्रह्माण्ड को देखने का दृष्टिकोण उस वक्त बदल गया जब स्टीफन हॉकिंग ने ब्लैकहोल की खोज की एवं हमें यह पता चला कि हमारे खगोलीय पिण्डों जैसे तारे, सूरज, आकाशगंगा आदि की दूरियां बढ़ रही हैं। प्रो. वर्मा ने बच्चों को यह भी बताया कि आने वाले दिनों में लीगा तथा लीमा तकनीकी से हमें ब्रह्माण्ड की विस्तृत जानकारी



मिलेगी। प्रो. वर्मा ने विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का जवाब भी दिया। अंत में चित्रकला प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। इस अवसर पर सम्पन्न हुए विभिन्न कार्यक्रमों में लगभग 368 विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

उधर सीएसआईआर-सीडीआरआई में प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में नई खोजों, नई तकनीकों एवं नवीन-अनुसंधान के व्यवसायीकरण के लिए नीतियों को सक्षम बनाना ही आज की मुख्य आवश्यकता है पर संस्थापक निदेशक, लाइफकेयर इनोवेशन डा. जितेंद्र एन. वर्मा ने विशेष जोर दिया। पद्मश्री डॉ नित्य आनंद ने समारोह की अध्यक्षता की निदेशक, प्रोफेसर आलोक धावन ने अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और इस वर्ष के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह की थीम (विषय) 'एक सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' के बारे

में जानकारी दी। डा. जितेंद्र ने कहा, नवाचार, अनुसंधान और विकास को व्यवसायीकरण के अनुकूल बनाने के लिए नीतियों को सक्षम (सशक्त) करने की आवश्यकता है। पद्मश्री डॉ नित्य आनंद ने कहा, नई प्रौद्योगिकियों और वैज्ञानिक उत्कृष्टता को अपनाने से आर्थिक परिवर्तनकाल के दौर में इस से नई दिशा नए शिखर मिले हैं और यह नए भारत में समाज को सशक्त बना रहा है। इसलिए, छात्रों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में रुचि और जागरूक बनाने की आवश्यकता है। बाद में डा. मृदुला कंबोज इनोवेशन अवॉर्ड-2017 के पुरस्कार विजेताओं, डा. अतुल गोयल और डॉ दिव्या सिंह ने अपने अपने अवार्ड अंशदान (व्याख्यान) प्रस्तुत किए। डा. वी पी कंबोज, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीडीआरआई ने डॉ मृदुला कंबोज इनोवेशन अवॉर्ड-2017 अंशदान समारोह की अध्यक्षता की।

सीएसआईआर-आईआईटीआर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित

कार्यक्रम में जितेंद्र शर्मा एमडी एवं सीईओ आन्ध्र प्रदेश मेडटेक जोन लिमिटेड ने सीएसआईआर-आईआईटीआर की ओर से विकसित जल शोधन प्रौद्योगिकी ओनिर में अपनी गहरी रुचि व्यक्त की और संस्थान के साथ एक तकनीकी हस्तांतरण के लिए एमओयू में रुचि दिखायी। श्री नाथ ने सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए सफल स्टार्ट-अप में प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर प्रकाश डालने वाली स्पष्ट प्रस्तुति दी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर आलोक धावन ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि यह व्याख्यान बहुत ही प्रेरक है, आशा है कि संस्थान के युवा वैज्ञानिक एवं छात्र इससे प्रेरणा लेंगे। इस मौके पर सूर्या पब्लिक स्कूल सुल्तानपुर और केन्द्रीय विद्यालय अलीगंज तथा सीआरपीएफ स्कूल की शाखाओं के 300 से अधिक छात्रों ने संस्थान के इनोवेशन एंड ट्रांसलेशन रिसर्च (सीआईटीएआर) ने केन्द्र का दौरा किया।

Published in:

Amar Ujala, Page no. 2

CSIR-IITR

12th May, 2018

TECHNOLOGY DAY

The Indian Institute of Toxicology Research (IITR) observed National Technology Day in Friday as an Open Day for school and college students. As a part its Jigyasa programme, more than 300 students from Surya Public School (Sultanpur) and Kendriya Vidyalaya's Aliganj and CRPF branches visited IITR's Centre for Innovation and Translation Research (CITAR) of IITR. The institute also hosted Jitendra Sharma, managing director and CEO of Andhra Pradesh Medtech Zone Limited. He expressed interest in O-Neer, the water purifica-

tion technology developed by IITR and explored the possibilities of a technology transfer MOU with the institute. The celebrations continued through the day and culminated with a 'Technology Day' lecture by co-founder and managing partner of Venture Catalysts (UP) Vinayak Nath. He made a presentation highlighting the role of relevant technologies in successful start-ups to ensure sustainable growth. IITR director Alok Dhawan said risk mitigation played a key role in ensuring commercialisation of new technologies and their success in fulfilling public needs.



National Technology Day at IITR

Published in:
The Pioneer

CSIR-NCL

12th May, 2018

Focus on road safety: ARAI chief

ARAI Director Rashmi Urdhwareshe was speaking on Nat'l Tech Day at CSIR-NCL

ST CORRESPONDENT

reporters@sakaaltimes.com

Pune: "A whole system approach in mobility transportation is being developed in the country now. India, in the Global Conference on Traffic Safety in Brazil, has committed to reduce the number of road accidents and fatalities by 50 per cent by 2020 by improving safety, efficiency and sustainability in the transport sector," said Rashmi Urdhwareshe, Director, Automotive Research Association of India (ARAI), while giving a lecture on 'Future Trends in Automotive Technology', at CSIR-National Chemical Laboratory (CSIR-NCL) on National Technology Day on May 11.

She said, "We should come together to encour-



Rashmi Urdhwareshe

age the use of current safety equipment for the passive and active safety."

Throwing light on the Indian auto industry, she said, "India is the largest truck manufacturing country, second largest bus manufacturer, third largest heavy truck manufacturer, fifth largest passenger vehicle and commercial vehicle manufacturer and largest gear mar-

ket for the entire world."

"Addressing the environmental challenges is also crucial. A complete integrated approach has been adopted, which includes clean air, thermal policies and rural public infrastructure to promote environment cleaning, fuel and energy management, regulations and standards," she added.

She said that several vehicles are already running on roads, making pollution a major issue today. Mitigation strategies are required for the problems faced in the transportation sector.

She also spoke about different vehicle technologies that focus on fuel efficiency improvement through powertrain engineering. She also informed about the possible alternative fuels that

can be used in vehicles for transportation.

She added that research is going on to protect lives of people on one hand and on increasing the speed of vehicles on the other hand. She also talked about the efforts made for smart structure technologies, electric motor and battery development.

Earlier, Prof Ashwini Kumar Nangia, Director, CSIR-NCL, welcomed the audience and introduced the speaker. Following the lecture, a meeting was held to discuss the mutual research interests of ARAI and CSIR-NCL.

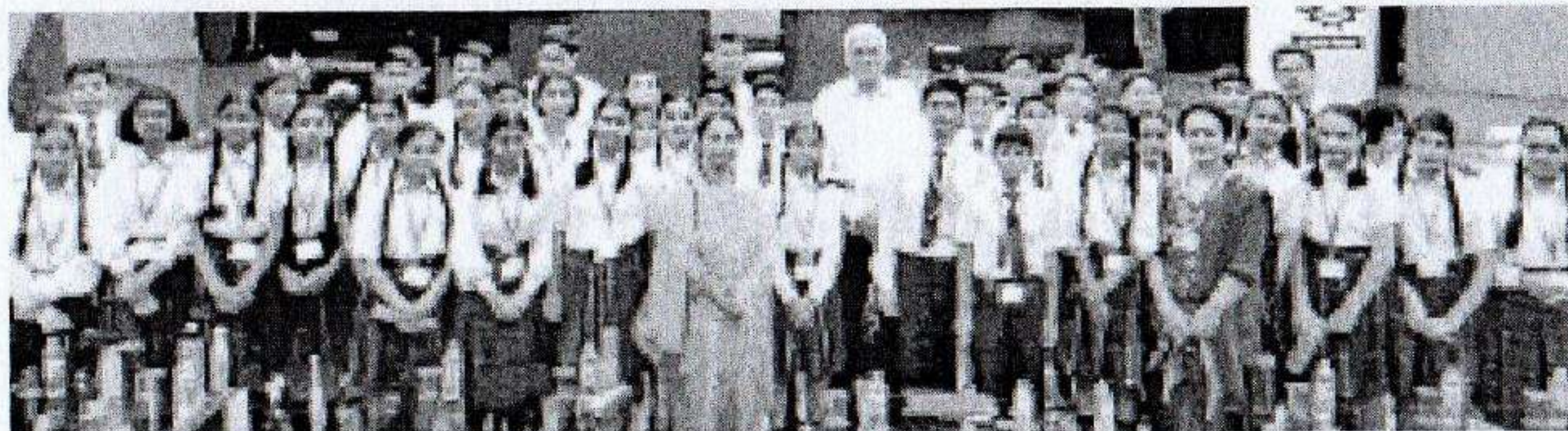
The agenda of the meeting was to identify key areas where the unique expertise of ARAI and CSIR-NCL could be integrated to develop collaborative research programmes.

Published in:

Sakal Times, Page no. 4

जैविक कृषि में सहायक होगा सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

संवाद सहयोगी, पालमपुर : सीएसआइआर के हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने शुक्रवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। इस मौके पर संस्थान की शोध एवं विकास गतिविधियों की जनता को जानकारी दी गई। स्थानीय स्कूलों के विद्यार्थियों को प्रयोगशालाओं में ले जाकर शोध कार्यों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर आयोजित समारोह में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के एपी गोयल, कृषि विश्वविद्यालय एवं शेर-ए-कश्मीरकृषि विश्वविद्यालय श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) के पूर्व कुलपति डॉ. तेज प्रताप ने जैविक कृषि के परिप्रेक्ष्य और भविष्य की रणनीतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों में प्रदूषण जैसी समस्याओं से निजात पाना अति आवश्यक है। इसके लिए जैविक कृषि एक बेहतर विकल्प है। जैविक कृषि के मुख्यतः चार पहलू हैं-ओमा, वैदिक, प्राकृतिक और इंको फार्मिंग। हमें इन्हें अपनाना होगा। जैविक कृषि में सूचना



सीएसआइआर पालमपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता मुख्य अतिथि के साथ • जागरण

प्रौद्योगिकी का उपयोग सहायक सिद्ध हो सकता है। वर्तमान में जैविक कृषि का भारत में कुल व्यवसाय 0.3 प्रतिशत है, जबकि वैश्विक स्तर पर एक प्रतिशत है। समारोह में वैज्ञानिक अनुपम वर्मा ने प्राचीन भारत की सीखने की कला के शानदार आधार को याद दिलाया। हरित क्रांति और देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए शोध एवं विकास संगठनों के योगदान की सराहना की। उन्होंने औद्योगिक एंजाइमों के बायोप्रोसेपेकिंग में संस्थान के प्रयासों की भी सराहना की।

जैविक कृषि की बाधाओं पर भी जानकारी दी। संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने संस्थान के शोध व विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। संस्थान ने उत्तरी क्षेत्र में प्राकृतिक स्वीटनर स्टीविया की खेती को बढ़ावा देकर रोजगार के लगभग 0.5 मिलियन अवसर प्रदान किए हैं। उन्होंने बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस को 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' थीम के साथ मनाया गया जा रहा है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक कुमार सरियाल ने

विद्यार्थियों को व्यर्थ संसाधनों का उपयोग कर जैविक खाद तैयार करने के लिए प्रेरित किया। कृषि विश्वविद्यालय पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सीएल आचार्य ने भी जानकारी दी। डीएवी विश्वविद्यालय जालंधर के डीन एवं मानव संसाधन विकास केंद्र सीएसआइआर के पूर्व प्रमुख डॉ. नरेश कुमार ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों को भारत में प्रौद्योगिकी में नवोन्मेष को प्रोत्साहित करने और इसे बौद्धिक संपदा अधिकार के अंतर्गत पंजीकृत करने के लिए कहा।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर आइएचबी पालमपुर में बोले वैज्ञानिक, संस्थान के कार्यों से जनता को करवाया अवगत, विद्यार्थियों को दिखाई प्रयोगशालाएं

क्यों मनाते हैं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी दिवस

विज्ञान व प्रौद्योगिकी के साथ समाज और उद्योग के एकीकरण के लिए राष्ट्र प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाता है। यह दिवस 1998 में पोखरण में सफलतापूर्वक किए गए परमाणु परीक्षण तथा विश्व का छठा परमाणु देश बनने पर मनाया जाता है। इस दिन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने त्रिशू मिसाइल का सफल परीक्षण किया था। इसके अतिरिक्त इस दिन सीएसआइआर के स्वदेशी विमान हंस-3 ने भी बेंगलुरु में उड़ान भरी थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी।

Students of Kendriya Vidyalaya, Chakardharpur visit NML

CSIR-NML

11th May, 2018



Jamshedpur, May 10 : A group of 36 students from Kendria Vidhyalaya, Chakardharpur accompanied by two teachers, Rano Marandi and Rahul Kumar Singh visited at CSIR-National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur and interacted with scientists and research scholars this morning under the aegis of “Jigyasa programme”. The objective of the programme is to provide exposures of research environment and simultaneously inculcate interest towards science among school students and further pursue carrier in the science stream. The students were thrilled and curiosity was observed among students and teachers.

The programme was scheduled for five hours, Dr.P.N. Mishra, Principal Scientist, initiated the programme with welcome address and introduced students and teachers with the members of “Jigyasa programme” and further discussed about importance and uses of natural resources like minerals, ores and rocks. Contribution of CSIR-NML towards the utilization of natural resources further, discussed about fundamentals of science and its various branches to inculcate interest towards science among students and request students to pursue science as carrier for further study. Dr. A.K. Sahu, Senior Technical Officer proposed the vote of thanks. After brief up, a laboratory visits programme was organized by Shri S.N. Hembram and Dr. A.K. Sahu leads two groups separately and coordinated by Dr. P.N. Mishra, Group leader of the programme and make arrangement to interact with scientists and research scholars. The students expressed their desire and feeling, asked numbers of question and clarify doubt with working scientists.



Students visited creep testing units, Shri P.K. Roy of MTE Division explained about fatigue, creep, fractures prevailing in different types of industrial components like reformer tubes, boilers and others components. They get exposure of different machine like Servo Hydro Testing Machine, Servo Electrical Machine and Furnace, applied in mechanical testing and evaluation. A live demonstration was arranged at Analytical Chemistry Division by SoniJha, introduced about conventional as well as non-conventional methods applied in chemical analysis of ores, minerals and different types of metals. Students asked number of question and answered by deputed research scholars. Mechanical Testing Unit was the attraction among the students and teachers. Mr. A.P. Murugesan,

Scientist explained about forging, shaping and rolling machine, wire Drawing Machine with live demonstration. Teachers and students requested for their next visit to the laboratory for gain deeper knowledge. Students expressed their view that the NML visits has helped in increasing knowledge base and motivated to pursue carrier in metallurgy and materials science. They were satisfied to know about the consistent effort and research emphasis in various sectors, especially in minerals based industries for the ultimate growth and development of India. They thanks to Ministry of Human Resources Development, Govt. of India to launch “Jigyasa Programme” tie up with council of Scientific & Industrial Research to get opportunity to visit National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur.

Published in:
[Avenue Mail](#)

Students visit NML to study R&D Activities

CSIR-NML

11th May, 2018

A group of 36 students from Kendria Vidhyalaya, Chakardharpur accompanied by two teachers, Rano Marandi and Rahul Kumar Singh visited at CSIR-National Metallurgical Laboratory, Jamshedpur and interacted with scientists and research scholars this morning under the aegis of “Jigyasa programme”. The objective of the programme is to provide exposures of research environment and simultaneously inculcate interest towards science among school students and further pursue carrier in the science stream. The students were thrilled and curiosity was observed among students and teachers.

The programme was scheduled for five hours, Dr.P.N. Mishra, Principal Scientist, initiated the programme with welcome address and introduced students and teachers with the members of “Jigyasa programme” and further discussed about importance and uses of natural resources like minerals, ores and rocks. Contribution of CSIR-NML towards the utilization of natural resources further, discussed about fundamentals of science and its various branches to inculcate interest towards science among students and request students to pursue science as carrier for further study. Dr. A.K. Sahu, Senior Technical Officer proposed the vote of thanks.

After brief up, a laboratory visits programme was organized by S.N. Hembram and Dr. A.K. Sahu leads two groups separately and coordinated by Dr. P.N. Mishra, Group leader of the programme and make arrangement to interact with scientists and research scholars. The students expressed their desire and feeling, asked numbers of question and clarify doubt with working scientists. Students visited creep testing units, P.K. Roy of MTE Division explained about fatigue, creep, fractures prevailing in different types of industrial components like reformer tubes, boilers and others components.

containing bioactive compounds should be advised. According to Prof Katoch, a big gap still exists between clinical applications and drug development. He emphasised that knowledge of epigenomics to epigenetics with proper population base would be best strategy to discern the mechanisms and develop efficacious drugs. Dr S Chandrasekhar, Director, CSIR-IICT, spoke about extensive contribution of IICT in developing technologies in HIV and some cancer varieties.

National Technology Day gets celebrated by CSIR-IICT in Hyderabad

CSIR-IICT

11th May, 2018



Dr A V Rama Rao, CMD, AVRA Labs and former Director IICT lighting a lamp during the National Technology Day celebrations in IICT on Friday. Dr S Chandrasekhar, IIT Director (extreme right), Dr V M Katoch, chief guest (middle) also seen

Hyderabad: The CSIR-Indian Institute of Chemical Technology (IICT) celebrated the National Technology Day by organising lectures by eminent scientists. Dr AV Rama Rao, CMD of AVRA Labs and former director of CSIR-IICT sponsored the AV Rama Rao Technology Award and the AV Rama Rao Young Scientist Award. The chief guest Prof V M Katoch, NASI-ICMR, Chair at the Rajasthan University of Health Sciences, delivered the A V Rama Rao Technology Award Lecture on 'Search for Opportunities in Epigenetics and Epigenomics for Prevention and Treatment

Dr Sujit K Ghosh, Associate Professor, IISER, Pune, was conferred the A V Rama Rao Young Scientist award. He delivered the award lecture on 'Metal-Organic Frameworks for Sensors, Separations and Other Functions' On this occasion, an MoU was signed between CSIR-IICT and M/s Maitri Auquatch Pvt Ltd, for jointly working in atmospheric water generators (AWGs). Former Secretary, Department of Health Research and Director-General of ICMR Prof Katoch stated that epigenetic changes happen in a regular/natural fashion, but there is influence of several factors, including age, environment/lifestyle and food habits that develops the disease. He discussed several diseases such as cancer, diabetes, and wound healing and neurodegenerative ailments like Alzheimer's wherein many aspects of epigenetic changes controlled by DNA are altered within the cell leading to the development of disease. To reverse these epigenetic changes, thoughtful consumption of food

They get exposure of different machine like Servo Hydro Testing Machine, Servo Electrical Machine and Furnace, applied in mechanical testing and evaluation. A live demonstration was arranged at Analytical Chemistry Division by Soni Jha, introduced about conventional as well as non-conventional methods applied in chemical analysis of ores, minerals and different types of metals. Students asked number of question and answered by deputed research scholars.

Mechanical Testing Unit was the attraction among the students and teachers. A.P. Murugesan, Scientist explained about forging, shaping and rolling machine, wire Drawing Machine with live demonstration.

Nuclear energy is green: Dr. Sinha

CSIR-NEERI

11th May, 2018



“Various agencies have categorised nuclear energy as ‘conventional’. Scientists should come forward and convince scientifically the policy-makers that nuclear energy is ‘green’,” said Dr Ratan Kumar Sinha, Homi Bhabha Chair Professor, Bhabha Atomic Research Centre, and former Chairman, Atomic Energy Commission & Secretary, Department of Atomic Energy. Dr Sinha was speaking as the chief guest at National Technology Day celebration organised by CSIR-National Environmental Engineering Research Institute (CSIR-NEERI) on Friday in NEERI Auditorium here. Dr J S

Pandey, Chief Scientist and Science Secretary, CSIR-NEERI, and Prakash Kumbhare, Senior Principal Scientist, CSIR-NEERI also shared the dais on this occasion. While delivering a lecture on ‘To Pokhran and Beyond -- Journey of the Indian Nuclear Programme’, Dr Sinha said that the mandate of Department of Atomic Energy was multi-fold including energy security, healthcare, medicine, industry, agriculture, food preservation, etc. He outlined India’s nuclear programme right from its evolution. He informed the gathering that from 1974 to 1998, India achieved self-reliance in nuclear technology, and continuously progressed in nuclear energy after the Pokhran test. India is the only country in the world, other than the US, to acquire nuclear weapons capability entirely on its own, he added. In his welcome address, Dr J S Pandey said that there was a need to invest more on technology development. He informed the gathering about the initiatives taken by

NEERI to take technologies to the society. Shaswati conducted the proceedings and Prakash Kumbhare proposed a vote of thanks.

Published in:
[The Pioneer](#)

NEIST meet stresses research on oil and gas sector

CSIR-NEIST



The North East Institute of Science and Technology (NEIST) here has achieved the distinction of being globally ranked 556 among 5250 institutes surveyed by SCImago for 2017. It is possibly the first on the list among research institutes in the Northeast. D Ramaiah, director of the Institute, said two years ago it was not even on the list. “We made it into the list for the first time in 2016 and were ranked 638. This time we have almost gone 100 ranks ahead,” he said. According to the SCImago website, ‘SCImago is a research group from the Consejo Superior de Investigaciones Científicas (CSIC), University of Granada, Extremadura, Carlos

11th May, 2018

III (Madrid) and Alcalá de Henares, dedicated to information analysis, representation and retrieval by means of visualisation techniques. The SCImago institutions ranking (SIR) is a classification of academic and research-related institutions ranked by a composite indicator that combines three different sets of indicators based on research performance, innovation outputs and societal impact measured by their web visibility. Unlike the Shanghai Academic Ranking of World Universities (ARWU), Quacquarelli Symonds (QS) rankings, Times Higher Education (THE) which focuses on higher education, SCImago focuses on research and its social impact apart from other parameters and includes research institutes both in the government and private sectors as well as institutes of higher education in both the sectors. In the article, Indian Research Institutions in the government sector, published in Current Science, Vol. 114 No 1, 10 January 2018 among the 29 out of 38

institutes which are under the Council of Scientific and Industrial Research and have made it into the global ranking, NEIST is in the 15th rank. Ramaiah said that among the CSIR institutes, NEIST has made jumped from 20th rank to 11th. The Current Science article further said in 2017 not a single private research institute in India made it into the list while 60 from the government sector besides the CSIR institutes included those under the Indian Council of Agricultural Research (ICAR), Defence Research and Development Organization (DRDO) and Indian Space Research Organization (ISRO).

Ramaiah said the achievement was a team effort and each division was to be praised for bringing this laurel to the institute. He hoped they would make a quantum leap in 2018.

Precision optics lab inaugurated at CSIO

CSIR-CSIO

11th May, 2018

A new facility to create integrated optical instruments was inaugurated at a premier national laboratory here today. The 'Precision Optics Laboratory' was unveiled on the occasion of National Technology Day at the Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) -- a constituent unit of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) dedicated to research, design and development of scientific and industrial instruments.

It was inaugurated by Dr T Ramasami, former secretary, department of science and technology. With this laboratory, it will be possible to develop space-saving integrated optical instruments for the armed forces and strategic sector, an official release said. Delivering a lecture, Ramasami emphasised that India, with an established research and development (R&D) infrastructure, low expertise costs and ability to create affordable innovations, is in an ideal and unique position to provide an alternative model for serving the technological needs to more than 60 per cent of the world.

National Technology Day is observed to mark the anniversary of the Pokhran nuclear test, which was held on this day in 1998. The day is celebrated to mark the Indian technological advancement in order to commemorate the history of India's technological capability and expertise, said CSIR-CSIO director R K Sinha. Many visitors, including students from various schools, colleges, universities, went around the CSIO laboratories, which was kept open for the public till afternoon.

Published in:
[Business Standard](#)

सीएसआईओ ने मनाया प्रौद्योगिकी दिवस

चंडीगढ़, 11 मई (ट्रिब्यून)

सेंट्रल साइंटिफिक इंस्ट्रुमेंट्स ऑर्गेनाइजेशन (सीएसआईओ) ने आज राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर ओपन डे और नेशनल टेक्नोलॉजी डे लेक्चर का आयोजन किया। सीएसआईओ की सभी लैब को आज आम लोगों के लिये खोला गया। विभिन्न स्कूलों-कालेजों से आये छात्रों और आम जनता ने संस्थान की लैब देखी और वैज्ञानिकों से सवाल-जवाब किये।

इस मौके पर आज केंद्रीय साइंस एंड टेक्नोलॉजी मंत्रालय के पूर्व सचिव पद्मभूषण डॉ. टी रामासामी ने प्रेसीजन ऑप्टिक्स लैबोरेटरी का उद्घाटन किया। सीएसआईओ में यह सुविधा उपलब्ध हो जाने से अब स्पेस सेविंग इंटेग्रेटेड ऑप्टिक्स इंस्ट्रुमेंट्स विकसित करने की संभावनाओं पर काम किया जा सकेगा। ये सेना और सामरिक सेक्टर के लिये काफी लाभप्रद साबित हो सकते हैं। सीएसआईओ हाल ही में कन्टेम्परेरी ऑप्टिकल

फाइबरेशन से लैस हुआ है। डॉ. टी रामासामी ने अपने भाषण में कहा कि टेक्नोलॉजी की खोज में आज रिसर्च और डेवलपमेंट की वर्तमान कल्चर स्पर्धात्मक उत्कृष्टता पर ही टिकी है। आज प्रयोग में लाये जा रहे मॉडल भविष्य में ज्यादा देर तक नहीं टिक पायेंगे। उन्होंने कहा कि बड़ी पूंजी से चलायी जा रही टेक्नोलॉजी को कम रिसोर्स वाले लोगों तक पहुंचाना होगा क्योंकि ऐसी टेक्नोलॉजी ही आर्थिकता और विकास में बड़ा रोल अदा करती है।

Published in:

Dainik Tribune, Page no. 4

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR_IND](#)



[CSIR India](#)